रिकार्ड– कौन आया मेरे मन..... ओमशांति प्रातःक्लास 8.1.68

बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। दूसरी कोई भी संस्था नहीं होती है जो कि कहे कि बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे जानते हैं कि बरोबर सब बच्चों का बाप एक ही है। सब ब्रदरहुड है। उस बाप से जरूर बच्चों को वर्सा मिलता है। चक्र पर भी तुम अच्छी रीति समझा सकते हो कि यह है संगमयुग। जबकि मुक्ति और जीवमुक्ति मिलती है। तुम बच्चे तो जीवमुक्ति में जाओगे बाकी तो सभी मुक्तिधाम में ही बैठ जावेंगे। सदगति दाता लिबरेटर गाइट उनको ही कहा जाता है। कई2 बहुत अच्छी प्वाइंट्स होती हैं। रावणराज्य में कितने ढेर मनुष्य हैं। राम के राज्य सतयुग में एक ही आदि सनातन देवताओं का राज्य था। आर्य और अनार्य कहते हैं ना। आर्य सुधरे हुओं को और अनार्य ना सुधरे हुए को कहा जाता है। इस अर्थ को भी मनुष्य नहीं जानते हैं। सुधरयल ही सो फिर अनसुधरल कैसे बनते हैं। आर्य कोई भी धर्म तो है ही नहीं। सुधरयल तो यह देवतायें ही थे। फिर 84जन्मों के बाद अनसुधरेले बनते हैं। जो ही फिर उंच ते उंच पूज्य वो ही फिर पुजारी। हम सो का अर्थ भी बाप ने समझाया है। सीढ़ी पर समझाना तो बहुत अच्छा है। ऐसे नहीं कि आत्मा सो परमात्मा ,परमात्मा सो आत्मा। नहीं। यह तो विराट नाटक है ना। अब तुम समझते हो कि हम सो पूज्य सो ही फिर पुजारी बनते हैं। हम सो देवता फिर हम सो ही क्षत्रिय.....बनते हो। लिखा हुआ भी एक्युरेट चाहिए। सीढ़ी तो जरूर उतरेंगे ना। यह भी हिसाब है कि पूरे 84जन्म कौन लेते हैं। बाप कहते हैं कि तुम तो अपने जन्मों को ही नहीं जानते हो। मैं आकर बताता हूं। यह है ही 84 का चक्र। उसमें ही हम सो देवता.....बनते हैं। 21जन्म तो नामी–ग्रामी है। मनुष्य इन बातों को कुछ भी समझते नहीं हैं। बिल्कुल ही बंदर बुद्धि तमोप्रधान हैं। अब तुमको सारी नालेज है ;परंतु समझते बहुत मुश्किल से हैं। बाप खुद भी कहते हैं कि कोटों में कोउ ही आकर इस ज्ञान को लेंगे और देवता के धर्म का बनेंगे। इसमें आश्चर्य नहीं खाना चाहिए। चक्र पर तो समझाना बहुत ही सहज है। यह सतयुग तो यह कलियुग देखो। कोई तो सतयुग को देखकर वायरे हो जाते हैं। अरे, सतयुग में होत ही हैं बहुत थोड़े। झाड़ छोटा होता है। फिर वृद्धि को पाता है। इस झाड़ को तो किसी को भी पता नहीं है और ब्रह्मा की बात पर भी बिगड़ते हैं। बोलो कि ब्रह्मा के मुखवंशी ब्राह्मण तो जरूर ही चाहिए ना। यह सभी एडॉप्टेड बच्चे हैं। वो ब्राह्मण तो कुखवंशावली हैं। यह ब्राह्मण मुखवंशावली हैं। बाप तो आते ही हैं पतित दुनियां में। यह तो पराया रावण का राज्य है। बाप को ही आकर रामराज्य स्थापन करना होता है। तो किसी में तो प्रवेश करेंगे ना। जरूर पतित तन में ही आना होगा। यह तो देखो ना झाड़ में एकदम पिछाड़ी में खड़ा है। इनकी जड़जड़ीभूत तमोप्रधान अवस्था तो है ही ना। बाप भी कहते हैं कि बहुत जन्मों के अंत वाले शरीर में मैं प्रवेश करता हूं। यह अंतिम चौरासिवां जन्म है। तपस्या कर रहे हैं। हम भला इनको भगवान कहां कहते हैं? भगवान को ही ठिक्कर2 में समझ लेते हैं तो खुद ही ठिक्कर बुद्धि बन गए हैं। बाप कहते हैं कि कितने मूर्ख बन जाते हो। देवताओं की तो बात ही न्यारी है। अभी तुम यह पढ़ाई पढ़कर यह पद पाते हो। कितनी तो उंची पढ़ाई है। इन देवताओं को भगवान–भगवती कहते हैं ;क्योंकि पवित्र हैं। भगवान द्वारा इनके धर्म की स्थापना होती है तो जरूर भगवान–भगवती होने चाहिए ना ;परंतु इनको कहा जाता है महाराजा–महारानी। श्री ल. ना.। भगवान–भगवती कहना यह भी अंधश्रद्धा हो जाती है। भगवान तो एक ही होगा ना। शिव और शंकर का भी तुम ही भेद बताते हो। शंकर वास्तव में तो कोई भी पाप कर नहीं सकता है। हिंसक बन नहीं सकता। आंख खोलने से ही विनाश हो सकता है क्या? मनुष्य तो समझते हैं कि शंकर विनाश करते हैं। हम भी तो लिखते हैं ना शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश होता है। अगर नहीं देवे तो तीन चित्रों की शोभा नहीं रहती है। तीन मूर्ति तो हैं ना। वास्तव में तो यह होना नहीं चाहिए ;परंतु ना देखने से मनुष्य और ही मूंझ जावेंगे। इसलिए ही तो तुम शिव और शंकर को अलग2 कर बताते हो। ऐसे नहीं कहते हो कि यह है ही नहीं। कहेंगे कि देवताओं को भी यह उड़ा देते हैं। डिफिकल्ट बातें हैं ना। तुमको तो सारा चक्र

बुद्धि में है, जो2 महारथी हैं उनकी। सभी के लिए तो कहेंगे भी नहीं। भल सुनते तो हैं ;परंतु समझा नहीं सकते हैं। बुद्धि में ही नहीं ठहरता है तो क्या होगा? पाई–पैसे की दास–दासियां जाकर बनेंगी। यह समझना तो बहुत ही सहज है। आगे2 चलकर तुमको यह सारा सा. होगा ;परंतु उस समय तो कुछ भी कर नहीं सकेंगे। खेल तो पूरा हो गया ना। समय ही पूरा हो जावेगा फिर क्या कर सकेंगे? देखेंगे कि हम कौन सी दासी बनेंगे। सब सा. होगा। देखकर ही बाबा ताकीद करवाते रहते हैं ;परंतु देखा जाता है कि उंच चढ़ जाव यह हो नहीं सकता है। साफ बर्तन ही नहीं है। बुद्धि में किचर पटी भरी हुई है। हर एक सेंटर में ही ऐसे किचरे बुद्धि वाले हैं। हां, करके पाई–पैसे की प्रजा में आ जावेंगे। इसमें तो पुरुषार्थ बहुत करना चाहिए। चित्रों पर समझाने की प्रैक्टिस करनी चाहिए। ना समझा तो पिछाड़ी तक भी ना ही समझेंगे ,ना ही किसको समझा ही पावेंगे। यह तो कोई को भी समझाने की बातें हैं। डरने की तो कोई बात ही नहीं है। बड़े2 सीनों पर प्रदर्शनी ,म्यूजियम्सा होने चाहिए। इससे ही नाम भी होता है। बाबा ने कहा था कि सबसे प्रोव ओपीनियन लेते हैं। वो भी निकालना चाहिए ;परंतु बच्चों में तो थोड़ा सा ज्ञान आने पर ही अहंकार आ जाता है। प्रवाह(परवाह) ही नहीं रखते हैं। किसी की भी नहीं सुनते हैं। यह तो बच्चों को बहुत सर्विस करनी चाहिए। इसमें तो जांच भी करनी होती है कि समझने वाला है कि नहीं। यह नई दुनियां तो वह पुरानी दुनियां है। यह तो कोई भी समझ सकते हैं। सिर्फ समय लम्बा कर देने कारण ही मनुष्य मूंझते हैं। पहले2 तो बाप का पूरा2 परिचय देना चाहिए। जो2 देहीअभिमानी होकर रहते हैं अतिइन्द्रिय सुख भी उनका ही रह सकता है। सिर्फ भाषण मात्र ही से काम नहीं होगा। बाबा ने समझाया है कि भाषण करते हो तो समझो कि मैं भाई को समझाता हूं। आत्मअभिमानी बनना है ना। यह तो बहुत ही मेहनत की बात हे। बार2 बच्चे भूल ही जाते हैं। बाप ही आकर बच्चों को समझाते हैं। गायन भी है ना कि आत्माएं परमात्मा अलग रहे.....इसके अर्थ को भी तुम्हीं अच्छी रीति समझ सकते हो। जो महारथी हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना इसमें ही बहुत प्रैक्टिस है। तभी तुम अपने को पावरफुल समझोगे। जो अपने को आत्मा ही नहीं समझते हैं वो भला क्या धारणायें करेंगे? हम आत्मा बाप को याद करते हैं। याद से ही जौहर भरेगा। ज्ञान का बल नहीं। योगबल कहा जाता है। बाप कहते हैं कि तुम विश्व का मालिक बनते हो। तुम थे तो जरूर। औरों को भी अपने समान बनाना है। जब तक बहुतों को आप समान नहीं बनाया है तब भी विनाश नहीं होगा। फिर कितनी भी बड़ी2 लड़ाइयां लगें। बॉम्ब्स तक भी तो लड़ाई आई है। फिर बंद तो हो ही गई है ना। अभी तो बहुतों के पास बम्ब्स है। यह कोई रखने की चीज नहीं है। पुरानी दुनियां का विनाश का हो एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म स्थापन होना ही है। इस संगम पर ही स्थापन होता है। यह भी समझाना पड़ता है। तुम देखेंगे थोड़े समय बाद सभी कहेंगे बरोबर यह वही महाभारत लड़ाई है। भगवान है जरूर। जब तुम बहुतों को देखेंगे तब समझेंगे यह तो ठीक कहते हैं। यह वृद्धि को पाते रहते हैं। याद में तो बहुत ही माइट है। तुम जितना2 याद में रहेंगे उतना2 ताकत भरेगी। बाप की यादसे तुम ही औरों को लाइट देते हो। यहां निष्ठा में भी बैठने के लिए ला कहते हैं। मम्मा के पीछे कोई गद्दी पकड़े जो सभी को दृष्टि दे। मम्मा के जगह पर दीदी है ; परंतु इनको भी जाना पड़ता है। मम्मा भी जाती थी ;परंतु सीट पकड़नी होती है। यह दादा(ब्रह्मा) भी कहते हैं मेरे से भी बच्चे बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। प्रदर्शनी आदि में कितने मेहनत करते हैं। सारा दिन सर्विस करते रहते हैं। अभी थोड़ी देरी है। योग में यथार्थ रीति कोई रह नहीं सकते। खुद भी फील करते हैं योग में हम कम हैं। इसलिए तीर लगता नहीं है। भगवान कुमारियों में भी बैठ बल भरते हैं। तुम प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारियां हो ना। यह ब्रह्मा। तुम एडॉप्टेड बच्चे हो। क्रियेटर तो एक ही है। बाकी सभी पढ़ रहे हैं। इसमें यह भी आ गया।

फिर भी रचना हो गए ना। तुम देवता बनने लिए दैवी गुण धारण कर रहे हो। मेहनत लगती है। कहां2 दो फीते भी नहीं चल सकते। जैसे कि रीति पड़ गई है। बाबा नाम नहीं लेते हैं। नहीं तो समझना चाहिए बाबा सच्च कहते हैं। बरोबर अवगुण है। बच्चे भी फील करते हैं। एक/दो के स्वभाव को समझ सकते हैं। जिनके साथ रहना होता है। अभी तुम बच्चे समझते हो हम ही डबल सिरताज थे। अभी फिर बनते हैं। पहले2 तुम किसको समझाते हो तो मानने को तैयार नहीं होते हैं। फिर धीरे2 समझते हैं। इसमें बुद्धि भी बहुत चाहिए। आत्मा में बुद्धि है ना। सत–चित–आनन्द.....है। तुमको अभी देहीअभिमानी बनाया जाता है। जब तक बाप न आये तब तक कोई देहीअभिमानी होता नहीं। सभी देहाभिमानी हैं। अभी बाप कहते हैं तुम आत्माभिमानी बनो। मामेकम् याद करो तो तुमको मेरे से शक्ति मिलेगी। यह धर्म बहुत ताकत वाला है। सारे विश्व पर राज्य करते हो। कम बात है क्या? तुमको ताकत मिलती है बाप के साथ योग लगाने से। यह है नई बात। तो अच्छी रीत समझाना पड़ता है। आत्माओं का बेहद का बाप वह है। वह है ही नई दुनियां का रचता। नई दुनियां में इन्हों का राज्य था। अब नहीं है। फिर आकर जरूर देंगे ना। नहीं तो विश्व का आक्युपेशन बताओ क्या आकर किया? कृष्ण जयंति और शिव जयंति दोनों को मनाते हैं। अब दोनों में बड़ा कौन? उंच ते उंच जरूर निराकार को ही कहेंगे। शिव तो निराकार है ना। उसने क्या किया जो शिवजयंती मनाई जाती है। कृष्ण ने क्या किया? यह तो अभी धर्म की स्थापना होती है। लिखा हुआ भी है परमपिता परमात्मा। साधारण तन से स्थापना करते हैं। वही आत्मा 84जन्म लेती है। श्रीकृष्ण के चित्र में लिखत बड़ी अच्छी है। मनुष्य समझते हैं कृष्ण कैसे 84जन्म लेंगे? तब कौन लेंगे? 84जन्मों की कहानी तो जरूर चाहिए ना। कोई को पता भी नहीं है पूज्य सो पुजारी फिर कैसे बनते हैं। तुम कोई को समझाओ तो कहेंगे यह तो तुम्हारा(तुम्हारी) कल्पना है। अच्छा, फिर भल तुम अपना रास्ता लो। माथा मारने की दरकार ही नहीं। अनेक प्रकर क`मत–मतांतर हैं। श्रीमत तो एक ही बार मिलती है। बाकी है मानव मत। श्रीमत से तुम श्रेष्ठ बनते हो। मानव मत से श्रेष्ठ कैसे बनेंगे? यह ईश्वरीय मत तुमको एक ही बार मिलती है। सो भी पुरुषोत्तम संगमयुग पर। देवताएं तो मत देते नहीं। मनुष्य से देवता बन गए फिर खलास। उनको मत चाहिए ही नहीं। वहां गुरू आदि भी नहीं करते। यहां मनुष्य मत लेते हैं गुरुओं की। वे तो सभी हैं पतित। अगर कोई को पतित कहो तो बिगर (बिगड़) पड़ेंगे। इसलिए युक्ति से समझाना है। वह सन्यासी हैं ही हठयोगी। हम हैं राजयोगी। हठयोगी कब राजयोग सिखला नहीं सकते। सन्यासियों को अधिकार नहीं है। वह है ही निवृत्ति मार्गवाले। तीर्थों आदि पर भी प्रवृत्तिमार्ग वाले को ही जाना है। आगे पण्डे लोग जाते थे। अभी तो सन्यासियों को ले जाते हैं। वास्तव में उन्हों के लिए है निषेध। वह निवृत्ति मार्ग ही बिल्कुल अलग है। उन्हों को माता का मुंह भी नहीं देखना है। अभी भी कोई होंगे जो माताओं को पीठ दे बैठते हैं। उनके मत वाले भी कोई तो गद्दी पर होंगे ना। तुम बच्चों को कोई बात में मूंझने की दरकार नहीं है। टाइम तो है ही स्थापना में। बहुत मेहनत करनी पड़ती है। जो भी पास्ट हुआ ड्रामा अनुसार ठीक ही चला। यह ड्रामा बना हुआ है जो रिपीट होता रहता है। तुम्हारी सर्विस भी कल्प पहले माफिक होती है। ड्रामा ही तुमको पुरुषार्थ कराती है। पुरुषार्थ बिगर तो प्रारब्ध मिल न सके। पुरुषार्थ जरूर करना पड़ता है। वह भी करते हो कल्प पहले मिसल। पुरुषार्थ वालों की चलन से तुम समझ सकते हो। तब तो ग्रुप देख ऐसा समझाने वाला देते हैं। बहुत हैं जिनमें न ज्ञान है न योग है। पढ़ाने वाला बाप तो अच्छी रीत जानते हैं। कितनी बेहद की विशाल बुद्धि बनाते हैं। नशा रहना चाहिए भगवान हमको पढ़ाते हैं। हम किसके बच्चे हैं। बाप ही टीचर भी है। वैसे तो टीचर दूसरा होता है ना। बच्चे दूसरे होते हैं। यहां तो तुम भगवान के बच्चे भी हो। भगवान तुमको पढ़ाते भी हैं। कोई न पढ़ सकते हैं तो फिर भाग जाते हैं। भगवान भी समझते हैं यह हमारा बच्चा नहीं है। तुम देखते हो भगवान के बच्चे थे पढ़ते थे। फिर भाग गए। फिर समझ में आ जाता है तो पढ़ने लग पड़ते हैं। फिर योग में अच्छी

रीत रहे तो उंच पद पा सकते हैं। समझेंगे बरोबर हमने बहुत ही टाइम वेस्ट किया है। ऐसा स्कूल छोड़ दिया। मैं कितना नीच हूं। अब तो जरूर फिर बाप से वर्सा लेंगे। बाबा बाबा कह रोमांच खड़ी हो जानी चाहिए। बाबा हमको यह पद प्राप्त कराते हैं। कितना हम भाग्यशाली हूं। घड़ी2 बाप की याद रहे। डायरैक्शन पर चलते रहे तो बहुत उंन्नति हो सकती है। उनको सभी बहुत रिगार्ड देवें। अच्छे सर्विस करने वाले की चाकरी भी करना चाहिए ना। यह उंच पद पावेंगे ,हम दास–दासियां बनेंगी। तो रिगार्ड रखना चाहिए ना। अभी रिगार्ड न रखेंगे तो और ही कम पद पावेंगे। बाप कहते हैं पढ़े आगे अनपढ़े भरी ढोवेंगे। देहाभिमानी को कहा जाता है असुर। दैवी गुणों की धारणा हो न सके। तुम्हारा चेहरा ते बहुत ही फर्स्टक्लास होना चाहिए। अतिइंद्रिय सुख उन्हों से पूछो जिनको भगवान पढ़ाते हैं। कितना पढ़ाई पर अटेंशन और श्रीमत पर चलना चाहिए। श्रीमत पर चलते ही नहीं। मानव मत पर चलते हैं। तुम्हारी योग ताकत से विश्व भी पवित्र बनते जावेंगे। योग से ही तुम सृष्टि को पवित्र बना रहे हो। कमाल है। गोवर्धन पर्वत का दिखाते हैं ना चीच (छोटी अंगुली)पर उठाया। इस छी2 विश्व को जिन्होंने पवित्र बनाया है उनकी यह निशानी है। तुम कितने थोड़े हो। महारथी राजाई पद पाने वालों की ही ताकत है। जो योग में ठीक रहते हैं। बाकी तो प्रजा है। यह सेना है ना। इसमें कमांडर,कैप्टन है, मेजर्स हैं, कर्नल आदि सभी चाहिए ना। बाबा सब बताय सकते हैं। तुम अपना आपे ही निकाल सकते हो। तुम्हारी यह सच्ची2 सेना है। बाप खेवइया भी है। गायन भी है नइया लूडे2 पर डूबे नहीं। जो ब्राह्मण बने हैं वह स्टीमर में बैठे हैं। स्टीमर तो बहुत बड़ा है न। इसकी शास्त्रों में भी बात है। कोई स्अीमर में उतर खान–पान में लग जाते हैं तो रहे जाते हैं। यह भी ऐसे है। स्अीम्बर तो चलता रहता है। बुद्धि का योग ठीक रहे तो नइया चलती रहे। नहीं तो खड़ी हो जाती है। कितना भी समझाओ तो लायक बन नहीं सकते उंच पद पाने का। राजाई के लायक थोड़े ही हैं। 16108 के माला में जाना उनसे तो प्रजा में बड़े अच्छे धनवान होते हैं। यहां भी गवर्मेंट धनवानों से कर्जा उठाती है। अभी तुम बच्चे बहुत समझू बन गए हो। बाकी तो सभी बेसमझ हैं। किसको समझा नहीं सकते तो बेसमझू ठहरे ना। फिर और भी बहुत सब्जेक्ट्स हैं। उनसे भी मार्क्स मिल जाती है। बाप को याद करते तो बहुत ही खुशी होती है। एकदम रोमांच खड़ी हो जाती है। बाप कहते हैं मेरे बच्चे तुम मेरे से भी जास्ती मेहनत करते हो सारा दिन। मैं अपने से तुमको जास्ती मान देता हूं। जो सर्विस करते हैं। बाकी तो डिससर्विस भी बहुत ही करते हैं। बच्चों को तो बहुत ही खुशी रहनी चाहिए। राजाई स्थापन हो रही है। इसके लिए बहुत पुरुषार्थ करना चाहिए। औरों का भी कल्याण करना है। याद में रह भोजन बनावें तो भी बहुतों का कल्याण हो सकता है। वास्तव में कहां घर में त्रिमूर्ति का चित्र रखना भी रांग है। मूंझ पड़ते हैं। बाप तो कहते हैं मामेकम् याद करो। तो शिव का चित्र रख दो। उंच ते उंच शिवबाबा है। वह ही ज्ञान देते हैं ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा का भी चित्र होने से फिर वह सामने आवेंगे। इनको भूल जाना है। यह बीच में आना न चाहिए। अपन को आत्मा समझना है। अभी हम वापस जाते हैं। देहधारी कोई भी याद न आये। आत्मा की कट उतर जाये तो हम अपने घर जावें। उछलना चाहिए। कट तो बहुत ही खराब है। तुम बच्चे देहीअभिमानी बनने से 21जन्मों का वर्सा पाते हो। वहां कर्म अकर्म हो जाते हैं। विकर्म कोई होता नहीं। यहां रावण राज्य होने कारण विकर्म हो जाते हैं। कर्म, अकर्म, विकर्म का अर्थ भी तुम बाप द्वारा जानते हो। है तो गीता का ही अक्षर अभी तुम समझते हो वह है झूठी गीता। उसको कहेंगे भक्ति। ज्ञान नहीं कहेंगे। ज्ञान दिन भक्ति रात। तुम्हारी रात थी। अब फिर देवता बन दिन में जा रहे हो। तो बच्चों को नशा रहना चाहिए। जैसे शराब पीते हैं तो उसका नशा चलता है। फिर दो/चार घंटे बाद उतर जाता है। तुम्हारा नशा स्थाई रहना चाहिए। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।